B.A. ~~Part~~ Part - III
Philosophy Paper - 01

· Dr. Ragini Kumari
Prof & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

सांख्य के अनुसार सत्कार्यवाद
(भाग - I)

कारण - कार्य सिद्धान्त भारतीय तथा पाश्चात्य दार्शनिकों के लिए एक महत्वपूर्ण विवाद का विषय रहा है, जहाँ पाश्चात्य दार्शनिक इस सिद्धान्त की व्याख्या मुख्य रूप से तार्किक सिद्धान्त के रूप में देते हैं वहाँ भारतीय दार्शनिक इस सिद्धान्त की व्याख्या तत्वमीमांसीय सिद्धान्त के रूप में देते हैं। भारतीय दार्शनिकों के अनुसार किसी भी कारण - कार्य सिद्धान्त में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह निहित रहता है कि कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व उपादान कारण में वर्तमान रहता है या नहीं। इस प्रश्न का उत्तर भारतीय दार्शनिकों ने भावात्मक तथा निषेधात्मक दोनों दृष्टिकोण से दिया है। जो लोग इसका उत्तर निषेधात्मक रूप में देते हैं उनके मत को असत्कार्यवाद या आरम्भवाद की संज्ञा दी जाती है, इनके अनुसार कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व उपादान कारण में वर्तमान नहीं रहता है, लेकिन कुछ ऐसे भी दार्शनिक हैं, जो इस प्रश्न का भावात्मक उत्तर देते हैं। अतः इनके मत को सत्कार्यवाद की संज्ञा दी जाती है। इनके अनुसार कार्य अपनी उत्पत्ति के पूर्व अपने उपादान कारण में वर्तमान रहता है। सत्कार्यवाद को सांख्य दर्शन तथा बौद्ध दर्शन का माध्यमिक एवं योगाचार सम्प्रदाय और वेदान्त दर्शन स्वीकार करता है।

असत्कार्यवाद के समर्थक भारतीय दर्शन में न्याय वैशेषिक बौद्ध दर्शन का हीनयान सम्प्रदाय भौतिकवाद तथा मीमांसा दर्शन के कुछ समर्थक हैं।

सांख्य के सत्य कार्यवादी सिद्धान्त के अनुसार कारण-कार्य अभिन्न और पारस्परिक है। कार्य की अव्यक्तावस्था का नाम ही कारण है तथा व्यक्तावस्था का नाम ही कार्य। अतः कार्य कारण से भिन्न नहीं, बल्कि वह तो कारण ही व्यक्त अवस्था है। अतः कार्य की नवीन उत्पति की सम्भावना नहीं है, किसी ने लिखा है—

"Satkaryavadins believe that the effect is not a new creation but only an explicit Manifestation of its Material cause."

सांख्य के अनुसार कारण से कार्य की उत्पति का अर्थ है अविकसित (अव्यक्त) से विकसित (व्यक्त) होना। तथा इसके विपरीत विनाश का अर्थ है विकसित (व्यक्त) से अविकसित (अव्यक्त) होना। अतः कारण से कार्य का आविर्भाव और कार्य का कारण में तिरोभाव होता है। इन दोनों में मात्र स्वरूप का ही अन्तर है वस्तु का नहीं। जिस प्रकार सोने से आभूषण की उत्पति होती है और पुनः आभूषण को गला देने पर सोना बनने में मात्र एक दूसरे का रूपान्तर होता है, नयी रचना नहीं। यही सांख्य का सत्कार्यवादी सिद्धान्त है। सांख्य के सत्कार्यवाद को संक्षिप्त रूप में इस प्रकार कहा जा सकता है—

"Satkaryavada is the theory of the existence of effect in its cause prior to its production."

कार्य- कारण में भेद न मानने के कारण वे लोग "भेद सहिष्णु अभेदवादी" भी कहलाते हैं।

इस सम्बन्ध में यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि सांख्य अपने सत्कार्यवादी सिद्धान्त की स्थापना के पूर्व न्याय, वैशेषिक, बौद्ध के हीनयान सम्प्रदाय भौतिकवाद तथा मीमांसा दर्शन के असत्कार्यवादी सिद्धान्त का खण्डन करता है। सांख्य के सत्कार्यवाद के सम्बन्ध में ईश्वरकृष्ण ने सांख्यकारिका के 9वें श्लोक में कहा है —

असदकरणादुपादान ग्रहणात् सर्वसंभवाभावात् ।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम् ॥
(सांख्य कारिका – '9')

पुनः उक्त कारिका की व्याख्या करने पर हम पाते हैं कि इस सूत्र में मुख्य रूप से पाँच तर्कों का प्रयोग किया गया है, जिससे सांख्य की निम्नलिखित समर्थक युक्तियाँ स्पष्ट होती है —

(1) असदकरणात — सांख्य के अनुसार जो अस्तित्वहीन है यानी असत् है वह किसी भी हालत में अस्तित्ववान नहीं हो सकता। यदि कारण में कार्य की सत्ता सचमुच नहीं होती तो कर्त्ता के लाख प्रयत्न करने पर भी कार्य उत्पन्न नहीं होता, क्योंकि यह वैज्ञानिक सत्य है कि शून्य से किसी चीज की ~~कभी~~ भी उत्पत्ति नहीं हो सकती। जैसा कि वाचस्पति मिश्र ने भी अपने तत्वकौमुदी में कहा है कि नील वस्तु हजारों कलाकारों के उद्योग करने पर भी पीली नहीं बनायी जा सकती।।

"नहिं नीलम् शिल्पि सहस्त्रणापि पीतम् कर्तुम् शक्यते।"

इससे यही साबित होता है कि कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व अपने उपादान कारण में विद्यमान

रहता है। इस तर्क का समर्थन गीता से भी होता है। जैसा कि गीता भी कहती है—

"ना असतो विद्यते भावो, ना भावो विद्यते सतः।"
(2/16)

यानी असत् का कभी भाव नहीं होता तथा सत् का कभी अभाव नहीं होता।

(2) उपादान ग्रहणात — प्रत्येक कार्य अपनी उत्पत्ति के लिए अपने विशेष उपादान को ग्रहण करता है। दही चाहनेवाला दूध को और वस्त्र चाहनेवाला सूत को ही ग्रहण करता है। यदि ऐसा नहीं होता तो किसी कार्य विशेष की उत्पत्ति के लिए उसके कारण विशेष की आवश्यकता नहीं होती। अतः स्पष्ट है कि कार्य की सत्ता उत्पत्ति के पूर्व अपने उपादान कारण में होती है।

— To be Continued —

(3) सर्वसंभवाभाव